माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मविष्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

श्री एम एस मिश्रा
मध्यप्रदेष, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद.
भोपालण म्उंपसरू उेण्उपीतं1008/हउंपस बवउ

डॉ. आर.एस. पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक मिलेनियम कालेजऑफएजुकेषन
भोपाल म्.उंपसरूतेचंदकमलण्मकन/हउंपसण्बवउ

सांराष

प्रस्तुत षोधपत्र में "माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मविष्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में बैतूल शहर के 10 विद्यालयों से 80 विद्यार्थियो को न्यादर्ष के रूप में चुना गया था। जिसमें 40 बालक एवं 40 बालिकाओं का समूह था। आंकड़ों के सकलन के लिए उपकरण के रूप में रेखा गुप्ता का आत्मविष्वास मापनी एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए उपकरण के रूप में पूर्व कक्षा का परीक्षाफल का प्रयोग किया गया था। प्रस्तुत शोध कार्य से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि मैं सार्थक अन्तर है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है कि 21वीं षताब्दी में आने के बाद भी आदिवासी विद्यार्थियों को यह एहसास दिलाया जाता है। वह सामान्य वर्ग से अलग है। उनका स्तर निम्न है जिस वहज से उनके आत्मविष्वास में कमी आती है एवं जिसका असर उनकी षैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है।

मुख्य बिन्दु :– छात्र एवं छात्राऍं, आदिवासी विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थी, आत्मविष्वास, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावनाः– हमारे देश में आदिवासी से बहुत कुछ मिलते जुलते सामाजिक जन समूह निवास करते थे, अनेक भाषायें बोलते थे, विभिन्न मतावलंबी थे और छोटे–छोटे अलग जनसमूहों में एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करते थे। अंग्रेजों के भारत आगमन के बाद इन्हें 'गैर आर्य' कहा जाने लगा, तत्पश्चात इनकी अलग पहचान बनाई गई। जिन्हें वनवासी, वन्य जाति, आदिवासी आदि कहा जाने लगा। अंग्रेजों द्वारा इन्हें भारतीय हिंदू सभ्यता से अलग रखा गया। स्वतंत्र भारत में रहने वाली इन जनजातियों को अनुसूचित जनजाति कहा जाने लगा। वास्तव में भारतीय संविधान के अनुच्छेद–342 के प्रावधानों के अंतर्गत जारी किये गये राष्ट्रपति के आदेशों में अनुसूचित जनजाति की सूची को उल्लेखित किया गया है। इसीलिए इन्हें केवल जनजाति न कहकर अनुसूचित जनजाति कहा जाता है।

आत्मविष्वास का अर्थ है– 'स्वयं पर विष्वास करने के लिए स्वतंत्र होना'। आत्म–विष्वास हमारे जीवन के प्रत्येक पहलु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। आत्मविष्वास एक दृष्टिकोण हैं जो व्यक्ति को सकारात्मक सोचने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे व्यक्ति अपने–आप को किसी भी परिस्थिति में ढाल सकता हैं आत्मविष्वासी व्यक्ति अपनी क्षमता पर विष्वास करता हैं और अपने जीवन पर नियंत्रण रखते हैं। वे जो भी इच्छा रखते हैं प्लान बनाते हैं और आषा करते हैं, उसे पूरा करने में समर्थ होते हैं। आत्म विष्वास होने का मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति सब कुछ करने में समर्थ है। आत्म विष्वासी व्यक्ति की यर्थाथ आषाएं होती है कभी–कभी आषाएं पूरी न होने पर भी वह सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है। जो व्यक्ति आत्मविष्वासी नहीं होते हैं वे अधिकतर दूसरों के अनुमोदन पर निर्भर रहते हैं वे असफलता के डर से खतरा नहीं उठाते। वे सामान्यतः सफलता की आषा नहीं करते परन्तु आत्मविष्वासी व्यक्ति दूसरों की अस्वीकृत होने पर भी जोखिम उठाने की इच्छा रखते है।

समस्या कथन :– माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मविष्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देष्य

1- माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2- माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के आत्मविष्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3- माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के आत्मविष्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4- माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5- माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6- माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाऍं

1- माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2- माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के आत्मविष्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3- माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के आत्मविष्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4- माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5- माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6- माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का न्यादर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए बैतूल शहर के 10 विद्यालयों से 80 विद्यार्थियों को लिया गया। जिसमें 40 आदिवासी तथा 40 सामान्य विद्यार्थी थे। प्रस्तुत अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरणः–

आंकड़ों के सकलन के लिए उपकरण के रूप में रेखा गुप्ता का आत्मविष्वास मापनी एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए उपकरण के रूप में पूर्व कक्षा का परीक्षाफल का प्रयोग किया गया।

विष्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना क्रमांक – 1माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1.1 माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
आदिवासी विद्यार्थी	40	37.5	4.82	13.5	सार्थक अन्तर है
सामान्य विद्यार्थी	40	20.00	7.66		

उपरोक्त सारणी 1.1 से स्पष्ट है कि आदिवासी विद्यार्थियों का आत्मविष्वास का मध्यमान 37.5, सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास का मध्यमान 20 है। आदिवासी विद्यार्थियों का आत्मविष्वास का मानक विचलन 4.82 सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास का मानक विचलन 7.66 है। यह दर्षाता है कि आदिवासी विद्यार्थियों की विचलनषीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 13.5 है जो 0.01 विष्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास मे सार्थक अन्तर होता है। उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास मेें सार्थक अन्तरं है।

परिकल्पना क्रमांक – 2माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के आत्मविष्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1.2 माध्यमिक स्तर के आदिवासी छात्रो एवं सामान्य छात्रो के आत्मविष्वास के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
आदिवासी छात्र	20	38.00	5.33	7.04	सार्थक अन्तर है
सामान्य छात्र	20	25.00	10.11		

उपरोक्त सारणी 1.2 से स्पष्ट है कि आदिवासी बालकों का आत्मविष्वास का मध्यमान 38.00, सामान्य बालकों के आत्मविष्वास का मध्यमान 25.00 है। आदिवासी बालकों का आत्मविष्वास का मानक विचलन 5.33, सामान्य बालकों के आत्मविष्वास का मानक विचलन 10.11 है। यह दर्षाता है कि आदिवासी बालकों कि विचलनषीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 7.04 है जो 0.01 विष्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के आत्मविष्वास मे सार्थक अन्तर होता है। उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी छात्रो एवं सामान्य छात्रो के आत्मविष्वास मे सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना क्रमांक – 3 माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के आत्मविष्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1.3 माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के आत्मविष्वास के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
आदिवासी बालिकाएं	20	36.7	5.20	9.8	सार्थक अन्तर है
सामान्य बालिकाएं	20	27.00	11.14		

उपरोक्त सारणी 1.3 से स्पष्ट है कि आदिवासी बालिकाओं का आत्मविष्वास का मध्यमान 36.7, सामान्य बालिकाओं के आत्मविष्वास का मध्यमान 27.00 है। आदिवासी बालिकाओं का आत्मविष्वास का मानक विचलन 5.20, सामान्य बालिकाओं के आत्मविष्वास का मानक विचलन 11.14 है। यह दर्षाता है कि आदिवासी बालिकाओं कि विचलनषीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 9.8 है जो 0.01 विष्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के आत्मविष्वास मे सार्थक अन्तर होता है। उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के आत्मविष्वास मे सार्थक अन्तरं है।

परिकल्पना क्रमांक – 4 माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1.4 माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
आदिवासी विद्यार्थी	40	66.96	12.26	13.15	सार्थक अन्तर है
सामान्य विद्यार्थी	40	82.21	2.43		

उपरोक्त सारणी 1.4 से स्पष्ट है कि आदिवासी विद्यार्थियों का आत्मविष्वास का मध्यमान 66.96, सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास का मध्यमान 82.21 है। आदिवासी विद्यार्थियों का आत्मविष्वास का मानक विचलन 12.26, सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविष्वास का मानक विचलन 2.43 है। यह दर्षाता है कि आदिवासी विद्यार्थियों कि विचलनषीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 13.15 है जो 0.01 विष्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अन्तर है। उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तरं है।

परिकल्पना क्रमांक – 5 माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1.5 माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
आदिवासी बालक	20	75.94	16.38	9.7	सार्थक अन्तर है
सामान्य बालक	20	87.96	10.66		

उपरोक्त सारणी 1.5 से स्पष्ट है कि आदिवासी बालकों का शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 75.94, सामान्य बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 87.96 है। आदिवासी बालकों का शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन 16.38, सामान्य बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन 10.66 है। यह दर्षाता है कि आदिवासी बालकों कि विचलनषीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 9.7 है जो 0.01 विष्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारित मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अन्तर होता है। उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालकों एवं सामान्य बालकों के शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना क्रमांक – 6 माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी : 1.6 माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थकता

स्मूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
आदिवासी बालिकाएँ	20	73.1	18.9	4.90	सार्थक अन्तर है
सामान्य बालिकाएँ	20	80.9	16.6		

उपरोक्त सारणी 1.6 से स्पष्ट है कि आदिवासी बालिकाओं का शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 73.1, सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 80.9 है। आदिवासी बालिकाओं का शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन 18.9, सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन 16.6 है। यह दर्षाता है कि आदिवासी बालिकाओं कि विचलनषीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 4.90 है जो 0.01 विष्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अन्तर होता है। उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के आदिवासी बालिकाओं एवं सामान्य बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अन्तर है।

आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मविष्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध– शोधकर्ता द्वारा आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मविष्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया जो सारणी 1.7 में अवलोकनिय है।

परिकल्पना क्रमांक – 7

सारणी 1.7 आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मविष्वास एवं षैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	संख्या	मध्यमान	सारणीमान ;तद्ध	सहसंबंध गुणांक ;तद्ध	सार्थकता 0.05 स्तर
आत्मविष्वास	40	37.5	.88	.547	सार्थक
षैक्षिक उपलब्धि		66.96			

उपरोक्त सारणी 1.7 से स्पष्ट है कि आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मविष्वास एवं षैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक ;तद्ध . 898 है। जबकि 38 पर 0.05 स्तर पर सारणीमान .88 है। इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से अधिक है। अर्थात् .88ढ.547। अतः सहसंबंध सार्थक है।

निष्कर्षः– उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मविष्वास एवं षैक्षिक उपलब्धि में घणात्मक सहसम्बन्ध है।

परिणामः–

हमारा देष प्रजातान्त्रिक देष है। जिसमें जातिवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। किन्तु कई लोग जातिवाद को अपने फायदे के लिए बढ़ाया देते है। इन वजह से 21वीं षताब्दी में आने के बाद भी आदिवासी विद्यार्थियों को यह एहसास दिलाया जाता है। वह सामान्य वर्ग से अलग है। उनका स्तर निम्न है जिस वहज से उनके आत्मविष्वास में कमी आती है एवं जिसका असर उनकी षैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

- **शर्मा, एकता (2009)**. "किषोरों में शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा आत्म–सम्प्रत्यय और समायोजन स्तर का सृजनात्मकता के साथ सम्बन्ध" अप्रकाषित पीएच.डी. शोधकार्य, जामिया मिलिया इस्लामिया विष्वविद्यालय नई दिल्ली।
- **धाल, शिखा एवं ठुकराल, प्रवीन (2009).** इन्टेलीजेन्स ऐज़ रिलेटेड टू सेल्फ कान्फीडेन्स एण्ड अकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ स्कूल स्टूडेन्ट्स। जर्नल ऑफ ऑल इण्डिया एशोसिएशन फॉर एजुकेशनल रिसर्च वॉल्युम–21, नम्बर 2, पृष्ठ नम्बर–83।

- **मैकलेन जेनिफर (2005):** डिजरटेषन आब्सट्रेक्ट्स वैल्यूम 66 (ए) पी–एच.डी. एजुकेषन कोलम्ब्या विष्वविद्यालय छात्र–षिक्षा कॉलेज, पेज।
- अग्रवाल, संध्या (2008) **"षिक्षा मनोविज्ञान"** अनुप्रकाषन जयपुर।
- गैरट ई. हैनरी (1966) **"षिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग"** कल्याणी पब्लिषर्स, लुधियाना।
- गुड बी.सी. (1973) **"डिक्षनरी ऑफ एजूकेषन''** नेग्रा हिट बुक कै. न्यूयार्क।
- गुप्ता. एच.पी. (2005) **"सांख्यिकीय विधि"** शारदा पुस्तक भवन इलाहाबद।
- नरूला, संजय (2007) **"रिसर्च मैथडोलाजी"** स्वरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
- पाठक पी.डी. (2005) **"षिक्षा मनोविज्ञान"** विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।